ईश्वरीय
खजाना
टीम
Presents

विशेष पुरुषार्थ

तीव्रता से आगे बढ़ने की श्रेष्ठ युक्तियां

यह श्रेष्ठ पुरुषार्थ की
भिन्न भिन्न युक्तियाँ
बाबा की रोज
जैसे मीठी थपकी है
अन्तर्मन में
जो समा ले इसे
जीवन में उसकी सफलता
शत प्रतिशत पक्की है...

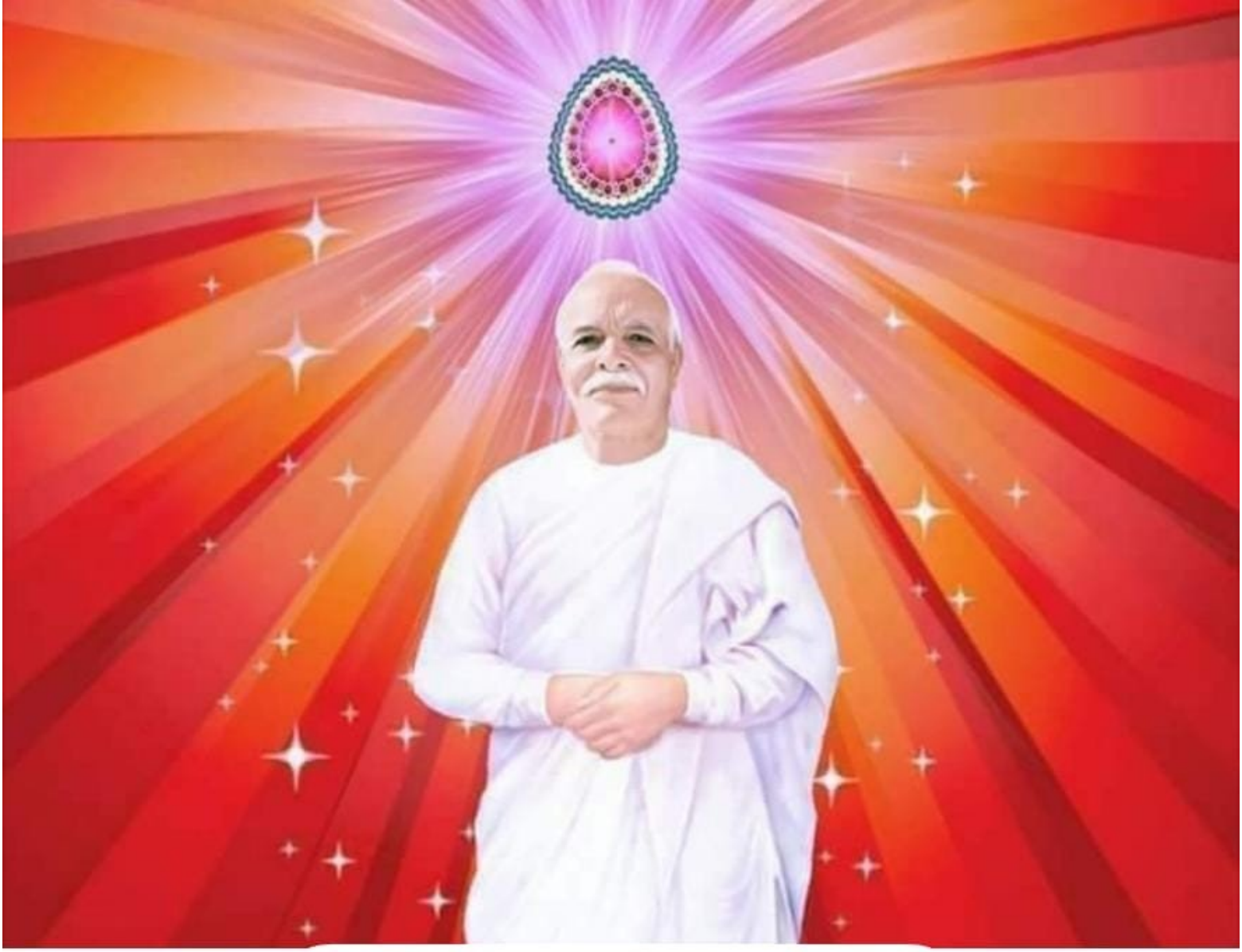

मीठे बच्चे - ज्ञान रत्नों की लेन-देन कर तुम्हें ज्ञान से एक-दो की पालना करनी है, आपस में बहुत-बहुत प्यार से रहना है

सदा सहज संतुष्ट रहने की विधि है..सदा अपने सामने कोई न कोई विशेष प्राप्ति को याद करो। जो-जो परमात्मा से मिला है उसे याद रखो तो सदा खुश रहेंगे ।

आप फरिश्ता बनो तो परिस्थितियों में परमात्मा स्वयं आपकी छत्रछाया बन जायेंगे।

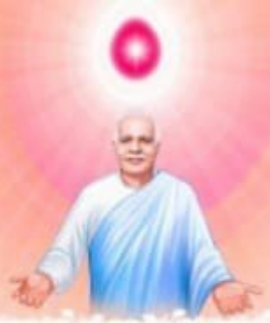

अव्यक्त शिक्षाएँ

पवित्रता की पहली आधारमूर्त पाइंट है "स्मृति की पवित्रता"। मैं सिर्फ आत्मा नहीं लेकिन मैं शुद्ध पवित्र आत्मा हूँ। आत्मा शब्द तो सभी कहते हैं लेकिन ब्राह्मण आत्मा सदा यही कहेंगे कि- मैं शुद्ध पवित्र आत्मा हूँ। श्रेष्ठ आत्मा हूँ। पूज्य आत्मा हूँ। विशेष आत्मा हूँ। यह स्मृति की ही पवित्रता आधार मूर्त है। तो पहला आधार मजबूत किया है? यह आक्यूपेशन सदा स्मृति में रहता है? जैसा आक्युपेशन वैसा कर्म स्वतः होता है। पहले स्मृति की स्वच्छता चाहिए। उसके बाद वृत्ति और दृष्टि। जब स्मृति में पवित्रता आ गई कि मैं पूज्य आत्मा हूँ तो पूज्य आत्मा का विशेष गायन क्या है? सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्वगुण सम्पन्न, १६ कला सम्पूर्ण। यही पूज्य आत्मा की क्वालिफिकेशन है। वह स्वतः ही स्वयं को और सर्व को किस दृष्टि से देखेंगे? चाहे अलौकिक परिवार में, चाहे लौकिक परिवार कहो वा लौकिक स्मृति में रहने वाली आत्मायें कहो, सभी के प्रति परम पूज्य आत्मायें हैं वा पूज्य बनाना है यही दृष्टि में रहे। पूज्य आत्माओं अर्थात् अलौकिक परिवार की आत्माओं के प्रति अगर कोई भी अपवित्र दृष्टि जाती है तो यह स्मृति का फाउन्डेशन कमज़ोर है। और यह महा-महा-महापाप है। किसी भी पूज्य आत्मा प्रति अपवित्रता अर्थात् दैहिक दृष्टि जाती है कि यह सेवाधारी बहुत अच्छे हैं, यह शिक्षक बहुत अच्छी है। लेकिन अच्छाई क्या है? अच्छाई है ऊँची स्मृति और ऊँची दृष्टि की। अगर वह ऊँचाई नहीं तो अच्छाई कौन सी है? यह भी सुनहरी मृगमाया का रूप है, यह सर्विस नहीं है, सहयोग नहीं है लेकिन स्वयं को और सर्व को वियोगी बनाने का आधार है। यह बात बार-बार अटेन्शन रखो।

अ.बापदादा-09.05.83

लौकिक कार्य करते अलौकिक कार्य के निमित्त बनने वालों के नम्बर

बापदादा- 23.02.1997

आप लोग यह नहीं सोचना कि हम लौकिक काम क्यों करें! यह तो आपकी सेवा का साधन है। लौकिक कार्य नहीं करते हो लेकिन अलौकिक कार्य के निमित्त बनने के लिए लौकिक कार्य करते हो। जहाँ भी जाते हो वहाँ सेन्टर खोलने का उमंग रहता है ना। तो लौकिक कार्य कब तक करेंगे- यह नहीं सोचो। लौकिक कार्य अलौकिक कार्य निमित्त करते हो तो आप सरेन्डर हो। लौकिकपन नहीं हो, अलौकिकपन है तो लौकिक कार्य में भी समर्पण हो। लौकिक कार्य को छोड़कर समर्पण समारोह मनाना है - यह बात नहीं है। ऐसा करने से वृद्धि कैसे होगी! इसीलिए जब निमित्त बनते हो, तो जो निमित्त लौकिक समझते हैं और रहते अलौकिकता में हैं, ऐसी आत्माओं को डबल क्या, पदम मुबारक है। समझा। इसीलिए यह नहीं कहना-दादी हमको छुड़ाओ, हमको छुड़ाओ। नहीं, और ही डबल प्रालब्ध बना रहे हो। हाँ आवश्यकता अगर समझेंगे तो आपेही छुड़ायेंगे, आपको क्या है! जिम्मेवार दादियां हैं, आप अपने लौकिकता में अलौकिकता लाओ। थको नहीं। लौकिक काम करके थक कर आते हैं तो कहते हैं क्या करें! नहीं खुशी-खुशी में दोनों निभाओ क्योंकि देखा गया है कि डबल विदेशी आत्माओं में दोनों तरफ कार्य करने की शक्ति है। तो अपनी शक्तिको कार्य में लगाओ। कब छोड़ेंगे, क्या होगा .... यह बाप और जो दादियां निमित्त हैं उनके ऊपर छोड़ दो, आप नहीं सोचो। कौन-कौन हैं जो लौकिक कार्य भी करते हैं और सेन्टर भी सम्भालते हैं, वह हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। आप निश्चिंत रहो। नम्बर आप लोगों को वैसे ही मिलेंगे, जो सारा दिन करते हैं उन्हों जितना ही मिलेगा। सिर्फ ट्रस्टी होकर करना, मैं-पन में नहीं आना। मैं इतना काम करती हूँ, मैं-पन नहीं। करावनहार करा रहा है। मैं इन्स्ट्रुमेंट हूँ। पावर के आधार पर चल रही हूँ।

दीदी मनमोहिनी जी की विशेषतायें

फ्राकदिल के साथ एकानामी का अवतार

दीदी आने वाले मेहमानों की भरपूर खातिरी करती, कभीकभी ऐसे सुहेज रचाती जिसमें 36 वा 56 प्रकार के व्यंजनों का ब्रह्माभोजन करवाती, एक बार तो दीदी ने 108 प्रकार का भोग बनवाया और सभी के साथ मिलकर खाया और खिलाया लेकिन साथ-साथ अनासक्त वृत्तियों पर भी ध्यान खिंचवाया। दीदी यज्ञ की एकॉनामी का बहुत ध्यान रखती, दीदी कहती गरीब-गरीब बच्चे, भोली-भोली मातायें अपनी मेहनत की कमाई यज्ञ में भेजती हैं, इसलिए कोई भी व्यर्थ खर्च नहीं करना है। अपने प्रति कम से कम खर्च हो, इस बात पर ध्यान रखना है। साधन सुविधायें सब सेवा के लिए हैं, अपने प्रति नहीं।

Worry means Writing a
Negative Movie Script of Life
Watching the movie again and again
On the screen of our mind and
Creating Fear each time.

YOU are the Scriptwriter,
Director & Actor of your movie.
Create what YOU Enjoy Watching.

BKShivani

Brahma Kumaris Websites

Main BK website www.shivbabas.org OR www.brahmakumari.org (by SBS team)

Int'l website: www.brahmakumaris.org

India website: www.brahmakumaris.com

BK Sustenance website: www.bksustenance.net

All Data hosted on www.bkdrluhar.com

Murli Websites: babamurli.net and madhubanmurli.org

www.omshantimusic.net

www.bkgoogle.org

www.bksewa.org

www.bkinfo.in

www.bk.ooo

www.brahmakumari.org/centres

NEW www.IshvariyaKhajana.BKhq.org